The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

गुरूकुल परम्परा और आज की शिक्षा में प्रासंगिकता

प्रीति जंघेल

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, देव संस्कृति कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नालॉजी, खपरी, दुर्ग छ.ग.

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18798024

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंम्परा ,गुरूकुल प्रतिमान, शिक्षा, सतत विकास।

ABSTRACT

भारत की गुरूकुल प्रणाली प्राचीन काल में शैक्षिक प्रतिमान थी, जो भारतीय संस्कृति और मूल्यों में निहित है। गूरू शिष्य के बीच भावनात्मक संबंध, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभ्यास करने से पहले होना चाहिए। पांपरिक गुरूकुल शिक्षा प्रणाली, जो सांस्कृतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता देती है। गुरूकुल प्रणाली में चरित्र निमार्ण, नैतिक मूल्य, सर्वागीण विकास, व्यक्तिगत मार्गदर्शन चरित्र, अनुभात्मक शिक्षा और तनाव मुक्त शिक्षा कमियों को दूर कर सकते है। परीक्षाओं में सिर्फ उत्तर लिखना कुछ तथ्यों या आंकड़ो को रटना ही नही था। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन के अनुसार गुरूकुल पंरम्परा में बौद्विक ,अध्यात्मिक, नैतिक और शारीरिक विकास का एकीकरण और आत्म–साक्षात्कार पर जोर आधुनिक शिक्षा के लिए प्रासंगिक है। गुरूकुल प्रणाली जो मूल्यों पर आधारित समग्र शिक्षा प्रदान करती है और वर्तमान शिक्षा मॉडलों की कमियों को दूर करने के लिए बहुमूल्य सबक देती है। शिक्षा वेदों, व्याकरण और व्युत्पत्ति, तार्किक तर्क, प्रकृति के रहस्यों को समझने, बलिदान के नियमों, विज्ञान और एक व्यवसास के लिए आवश्यक कौशल पर आधारित थी। भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली नें माना था कि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म–साक्षात्कार है इसलिए दुनिया के कई पहलुओं में अद्वितीय होने का दावा करती है।

प्रस्तावनाः–

भारतीय उपमहाद्वीप की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली गुरूकुल प्रणाली है। वैदिक युग में गुरूकुल की शुरूआात हुई थी जब मौखिक परंपराओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और गुरू–शिष्य परंपरा की मदद से इस प्रणाली को जीवित रखा गया था। अस उपयोग भारत में धार्मिक और साथ ही धर्म निरपेक्ष शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था। इन

गुरूकुलों ने धीरे–धीरे संस्थागत रूप लिया और हर तरह का ज्ञान प्रदान करने के लिए इस प्रणाली ने काम करना शुरू कर दिया। लगभग 1200 के दशक तक अधिकांश राजवंशों के अधीन गुरूकुलों को हमेशा राज्य संरक्षण प्राप्त था। देश में मुस्लिम शासन के आगमन के साथ, प्रणाली को बहुत अधिक प्रणालीगत विनाश का सातना करना पड़ा यानि गुरूकुलों का समर्थन करने वाली प्रणाली को बड़ी अति हुई। ''गुरूकुल'' या ''गुरूकुलम'' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। ''गुरू'' तथा ''कुल'' यह शाब्दिक रूप से 'गुरू के वंश' का अनुवाद करता है। लेकिन इसका इस्तेमाल सदियों से भारत में शैक्षणिक संस्थाओं के अर्थ में किया जाता रहा है। इसने गणित, विज्ञान, खगोल विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि जैसे विषयों को कैसे जन्म दिया। भारतीय संस्कृति के विकास में, 4 की प्रणाली पुरूषार्थ 4 वर्ण और 4 आश्रमों न केवल अन्योन्याश्रित थे। बल्कि गुरूकुलों ने उनके लिए एक महान समर्थन प्रणाली के रूप में काम किया। गुरूकुल में शिक्षक और छात्र आश्रमों में एक साथ रहते थे। इसका मुख्य उद्देश्य सर्वांगीण विकास था। गणित,विज्ञान से लेकर दर्शन और आध्यात्मिकता तक विषयों की एक विस्तृत श्रृंख्ला शामिल थी। गुरू मौखिक रूप से छात्रों को ज्ञान प्रदान करते थे। शिक्षा के गतिविधियों के माध्यम से जीवन कौशल भी सिखाए जाते थे। दुनिया भले ही बदल गई हो, लकिन गुरूकुल शिक्षा के मूल्य और नैतिकता आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक शिक्षा अक्सर अकादमिक ज्ञान और करियर में सफलता पर अधिक ध्यान केन्द्रित करती है, लेकिन चरित्र विकास की उपेक्षा करती है परिणाम स्वरूप तनाव, बेईमानी और सहानुभूति की कमी जैसी समस्याएँ आम हो गई है। कंपनियाँ भी ईमानदारी, टीम वर्क और जिम्मेदारी भी भावना रखने वाले कर्मचारियों को महत्व देती है इसलिए, गुरूकुल के मूल्य न केवल व्यक्तिगत रूप से लाभप्रद है बल्कि आधुनिक कार्यस्थल में पेशेवर रूप से भी महत्वपूर्ण है। गुरूकुल के मूल्यों जैसे अनुशासन, आदर, ईमानदारी और सेवा को पुनः स्थापित करके आज की शिक्षा को अधिक संतुलित बनाया जा सकता है। आधुनिक छात्र ध्यान, नैतिक कथावाचन और सामुदायिक सेवा जैसी गतिविधियों से अत्यधिक लाभ उठा सकते है।

भारतीय संस्कृति के विकास में 4 की प्रणाली पुरूषार्थः, 4 वर्ण और 4 आश्रमों न केवल अन्योन्याश्रित थे। बल्कि गुरूकुलों ने उनके लिए एक महान समर्थन प्रणाली के रूप में काम किया।

मुनीनं दषसाहस योन्नदानदि पोषाणत।

अध्यपति विप्रज्ञानरसौः स्मृतः।।

दस हजार ऋषि–मुनियों का पालन–पोषण करने वाले और शिक्षा देने वाले ऋषि कहलाते थे। कुलपति।

''गुरू का जीवन शिष्यों के सामने एक उज्जवल उदाहरण प्रस्तुत करता है और प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र को प्रभावित करता है।''

गुरूकुल परंपरा की विषेषताएँ–

1. **गुरू–षिष्य संबध :–** गहरा जुड़ाव और व्यक्तिगत मार्गदर्शन।
2. **व्यवहारिक ज्ञान :–** अनुभवात्मक और हाथ से खीचने पर जोर।
3. **नैतिक मूल्य :–** अच्छे नागरिक बनाने पर और चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान।
4. **समग्र षिक्षा :–** केवल अकादमिक नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर।
5. **प्रकृति–केन्द्रित :–** प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा।

आधुनिक समय में गुरूकुल प्रणाली की प्रासंगिकता–

गुरूकुल प्रणाली के कई तत्व ऐसे है जो आज भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली को प्ररित करते है जैसे कि–

1. नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया जिससे जिम्मेदार नागरिक तैयार हो सके।
2. पाठ्यक्रम में कौशल विकास पर दिये जाने वाले महत्व को प्रयोगशालाओं सरकारी योजनाओं आदि के रूप में देखा जा सकता है।
3. प्रत्येक छात्र को प्रदान का जाने वाली व्यक्तिगत देखभाल और मार्गदर्शन को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में लागू किया जा सकता है
4. गुरूकुल के मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए, इसे समकालीन जरूरतों के अनुरूप ढाल इसकी प्रासंगिकता बढ़ा सकती है।
5. समग्र विकास प्रणाली छात्रों के शारीरिक, मानसिक, भावनत्मक और आध्यात्मिक विकास पर जोर देती है जो आज की शिक्षा के लिए आवश्यक है।
6. गुरूकुल प्रणाली का पुनरूत्थान आधुनिक विज्ञान प्राद्योगिकी को परांपरिक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ एकीकृत करने का अवसर प्रदान करता है।

गुरूकुल मॉडल और वर्तमान षिक्षा प्रणाली के बीच अंतर–

आज की शिक्षा प्रणली मुख्य रू‍प से पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित हैं, जिसमें विदेशी संस्कृति का गहार प्रभाव है और भारतीय तत्वों की घोर उपेक्षा की जाती है। असका सीधा असर युवाओं के मन में पड़ता है, और वे भारतीय मूल्यों के विरूद्ध सोचने लगते है, जिससे उनमें राष्ट्रीय भावना का क्षय होता है। और वे देश–विदेश में चल रहे व्यापक संघर्षों के प्रति उदासीन हो जाता है। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का परिणाम बाहरी तौर पर परिस्कृत प्रतीत होता है, जो करियर के विशाल अवसर, मोटा वेतन, विलासितापूर्ण जीवन और बाहरी दुनिया के लिए पर्यटन का अनुभव प्रदान करता है। लेकिन इस तरह के रवैये के कारण उनके कार्यों और निर्णयों से उन्हें और समाज को बहुत नुकसान होता है, अनैतिक संबंधों और अपनी मातृभूमि के प्रति आदर की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि उनके पास मार्ग दर्शन के लिए कोई धर्म नही होता ।

जबकि प्राचीन गुरूकुल पद्धति अलग है। 8 वर्ष की आयु के बच्चों को उनके माता–पिता के घर से दूर गुरू के आश्रम में उनके साथ भेज दिया जाता है। जहाँ छात्र अन्य छात्रों के साथ मिलकर विभिन्न विषयों को सीखता है, स्मृति को तेज करता है, पूर्णता ज्ञान प्राप्त करता है, विभिन्न कौशलों में विशेषज्ञता हासिल करता है, स्थिरता बनाए रखता है, मन प्रबंध तकनीकों को सीखता है और जीवन कौशल जैसे के दूसरों के साथ सहअसतित्व बनाए रखना और समय, व्यक्ति और परिस्थितियों के अनुसार उचित व्यवहार करना सीखता है।

गुरू अंधकार को दूर करने वाला होता है वह न केवल विषय का ज्ञाता होता है, बल्कि आध्यात्मिक जीवन की उन्नत अवस्थाओं में भी लीन रहता है। विभिन्न विषयों में निपुर्णनता प्रदान करने के साथ–साथ एक शिक्षक प्रत्येक छात्र के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों पर नजर रखता है, उन्हे सुधारता है और उन्हें सभी मार्ग पर निर्देशित करता है।

ऐसे गुरू के मार्गदर्शन में छात्र अपने शारीरिक मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर नियंत्रण प्राप्त कर सकेंगे। इससे छात्रों में संतुष्ट मन का विकास होता है और वे ज्ञान की ओर अग्रसर होते है अंततः संपूर्ण मानव व्यक्तित्व का पोषन और विकास होता है और एक अनुशासित छात्र उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।

जब छात्र लगभग 18 वर्ष की आयु तक पहुँच जाते है, तो शिष्य अपनी इच्छित संबंधित भूमिकाएं ग्रहण कर लेते है और उन्हें उन्के वृद्ध माता–पिता के पास वापस भेज दिया जाता है।

अगर कोई भरत में छात्रों की मृत्यु दर के सर्वेक्षण पर नजर डाले, तो पता चलता है कि हर 90 मिनट में 200 छात्र आत्महत्या कर रहे है। यह सब रैंक, अकों और प्रतिस्पर्धा के अमानवीय दबाव के कारण हो रहा है। इस प्रकार, शिक्षण पद्धति और परिणामों दोनों के संदर्भ में दोनों मॉडलों की तुलना करने पर बहुत बड़ा अंतर देखने को मिलता है।

हम वर्तमान प्रणाली को गुरूकुल प्रणाली से कैसे मिला सकते है–

गुरूकुल पद्धति सर्वोपरी है। हमारे पास ऐसे आचार्य है जो पारंपरिक कार्य प्रणाली को संरक्षित रखते है। वे गुरू से कम नहीं है, वे जो अभ्यास करते है वही सिखाते है, उनका नैनिक दृष्टिकोण व्यापक है, उनका जीवन दोषरहित है, वे पूरी तरह से सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित है और बाह्य तत्व में गहराई से लीन है।

वैश्वीकरण के आगमन के साथ पाठ्यक्रम वैदिक विज्ञान और समकालीन विषयों का मिश्रण होना आवश्यक है। वैदिक शिक्षाओं की तुलना में, समकालीन विषय बहुत कम भाग ळे माता–पिता निश्चित रह सकते है कि छात्रों पर अत्यधिक तनाव नहीं पड़ेगा।

गुरूकुल के वातावरण में, छात्रों की ऊर्जा पूरी तरह से पढ़ाई पर केन्द्रित होती है, वह भी समर्पित घंटों के लिए, और आधुनिक संस्थानों में छात्रों के भाग्य के विपरित बिल्कुल भी विचलित नहीं होती है।

योग, वेदांत और मनोविज्ञान के अध्ययनों से पता चलता है कि फिल्में देखना, अत्यधिक भोजन करना, अनिसमित नींद की आदतें और घंटों स्क्रीन पर समय बिताना जैसी गतिविधियाँ अधिक ऊर्जा की खपत करती है, ध्यान भटकाती है, और एकाग्रता के स्तर को कम करती है।

विद्यार्थी जावन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण चरण होता है और शास्त्रों में इसे विशेष महत्व दिया गया है। इस अवधि को ब्रह्मचारी आश्रम` नाम से जाना जाता है, जिसमें किसी भी अन्य चीज से अधिक अत्यंत अनुशासित और व्यवस्थित जीवन की आवश्यकता होजी है।

गुरूकुल मॉडल का पुनरूद्धार –

21 वीं सदी के अभिभावको को उपरोक्त पंक्तियों पर गहराई से विचार करना चाहिए, सही निर्णय लेने मे कभी देर नहीं होती। स्वयं और अपने बच्चों को गुरूकुल के वातावरण में शामिल करना और दूसरों को भी इसी प्रकार प्रोत्साहित करना युग का धर्म है।

इससे निश्चित रूप से समकक्षों के बीच एक मिसाल कायम होगी और आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन मिलेगा। अंततः एक बेहतर व्यक्ति, एक आदर्श समाज और एक मजबूत एकीकृत राष्ट्र की स्थापना होगी।

निष्कर्ष –

आज की शिक्षा प्रणाली को परिक्षा केन्द्रित होने के बजाय अधिक मानव केन्द्रित और संतुलित बनाने के लिए गुरूकुल प्रणाली के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए, यह हमें एक ऐसा समाज बनाने में मदद करता है जहाँ छात्र न केवल सफल हो, बल्कि जिम्मेदार, नैतिक और संतुलित जीवन जीने वाले नागरिक भी बने। गुरूकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों दोनों के अपने–अपने फायदें और नुकसान है। इसलिए, गुरूकुल के पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा पद्धतियों के साथ एकीकृत करना और शिक्षकों को छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

गुरूकुल की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–छात्र संबंध, आत्मानुशासन और मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाता था। आधुनिक शिक्षण नवचारों और सर्वांगीण शिक्षा पद्धतियों के साथ तालमेल बिठाने पर यह प्रणाली आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। यह न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ाती है बल्कि छात्रों में नैतिक मूल्यों का पोषण करती है। जो लोग विरासत और नवाचार के सही संतुलन की तलाश में है।

प्रचीन समय में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली समग्र शिक्षा का कए आदर्श थी। इसमें ज्ञान को मूल्यों और नैतिकता के साथ एकीकृत किया गया था, जिससे ऐसे व्यक्ति तैयार हुए जो न केवल बुद्धिमान थे, बल्कि नैतिक रूप से मजबूत और सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी थे।

संदर्भ –

- https://share.google/PJ3x6CiUCoXJxuLlR https://share.google/8sMZI6JjgBOEiktc3
- https://share.google/1BWurjHgWrAncTGkP
- https://share.google/PDXznGeI1nkhQi2ku